

## वर्तमान समय में बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं की सामाजिक विवेचना

अनिल कुमार गोयल

शोध छात्र समाजशास्त्र

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र.

### शोध-सार

वर्तमान समाज में अधिकतर लोग अचेतन एवम् व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मनोरोगी हो रहे हैं। इसलिए वाहन चलाते समय उनके मस्तिष्क में सान्द्रता एवम् एकाग्रता वही रहती है, जिससे उनका जीवन दुर्घटना युक्त हो जाता है, और इससे सामाजिक एवम् आर्थिक क्षति होती है, जिनकी कभी पूर्ति नहीं हो सकती है।

आए दिन सड़क पर दुर्घटनाएं बढ़ती ही जा रही हैं। हर जगह एक्सीडेंट इतने ज्यादा हो रहे हैं, कि इन से निजात पाना बहुत ज्यादा मुश्किल हो रहा है। सड़क दुर्घटना के चलते ना जाने कितने ही परिवार उजड़ जाते हैं, जिसकी वजह से लोगों को बहुत ही परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। हम बचपन से यही देखते आ रहे हैं, कि अक्सर लापरवाही की वजह से सड़क दुर्घटनाएं होती रहती हैं। हमें बचपन से यही सिखाया जाता है, कि हमें जरूरत पड़ने पर हर किसी की मदद करनी चाहिए। सरकार के द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करना चाहिए। सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के लिये सामाजिक चेतना आवश्यक है जिससे लोगों का जीवन दुर्घटनाओं से बच सके लोगों में भी सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता आनी चाहिए, जिससे लोगों को पारिवारिक, आर्थिक व सामाजिक क्षति न हो, लोग

अपनी यात्राओं को पूरा करके सुरक्षा के साथ अपने गंतव्य तक पहुँच सकें।

### शोध—प्रपत्र

वर्तमान समय में सामाजिक मूल्यों और संस्कारों में व्यापक परिवर्तन मिले है। शहरों में यह परिवर्तन अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, सड़क पर हो रही दुर्घटनाओं में लोग घायल व्यक्ति की सहायता नहीं करते है, जिस कारण से सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है जो समाज के लिये क्षति है, अगर व्यक्ति किसी विशिष्ट समूह से है तो राष्ट्र को भी क्षति पहुँचती है।

लोग अक्सर सरकार पर यह आरोप लगाते हैं, कि सरकार ने हेलमेट ना पहनने के लिए इतने रुपए का जुर्माना लगा दिया है। सीट बेल्ट ना पहनने पर इतने रुपए का जुर्माना लगाया है, कभी किसी ने क्या यह सोचा है, कि सरकार यह क्यों करती है? यह सिर्फ हमारे भविष्य को और हमें बचाने के लिए ही करती है। हमारे हिसाब से अगर देखा जाए तो, हेलमेट पहनना और सीट बेल्ट लगाना कोई बड़ी बात नहीं है यह हमारे बचाव के लिए ही होती है।

आजकल फिल्म में ऐसे ऐसे स्टंट दिखाए जाते हैं, कि उन को कॉपी करने के लिए लोग न जाने क्या-क्या करते हैं। जो लोग देखते हैं, वही कॉपी करते हैं। कॉपी करने में दुर्घटनाएं होती हैं। हमारे समाज में लोगों के पास सड़क से संबंधित नियमावली के ज्ञान का प्रभाव हो या अधिकतर नियमों की उपेक्षा करते है, जिस कारण सड़क पर वाहन चलाते समय सुरक्षा की डिवाइस नहीं पहनते है और कई प्रकार की घटना घट जाती है, जिसके लिये जिम्मेदार वह स्वयं है।

सड़क दुर्घटना एक ऐसी दुर्घटना, जिसके बारे में हमें पता होता है फिर भी उसी रस्ते पर हम चले जाते हैं। भारत में जितनी बेवकूफी

सड़क दुर्घटनाओं को लेकर की जाती है, उतनी किसी देश में नहीं होती है। अगर सभी सावधानियों को बरतते हुए ड्राइविंग करेंगे, तो भारत में भी सड़क दुर्घटना के त्रासदी कम हो जाएंगी। भारत में लगभग 1 साल में डेढ़ लाख से भी अधिक सड़क दुर्घटना के मामले सामने आते हैं। **“2006 से छह वर्षों में दुर्घटना से संबंधित आँकड़ों का विश्लेषण महाराष्ट्र राज्य सड़क विकास निगम, भारत (डैट्क), इंगित करता है।”<sup>1</sup>**

“चौरासी प्रतिशत दुर्घटनाएँ, आखिर ऐसा क्यों है?” अगर हम थोड़ी सी सावधानी को ध्यान में रखते हुए ड्राइविंग करेंगे तो सड़क दुर्घटनाएं अपने आप में कम हो जाएंगी। सबसे बड़ा प्रश्न यह उठता है, कि इतनी सड़क दुर्घटनाएं क्यों होती हैं? शायद इसका जवाब हम सभी जानते हैं, बस उस चीज को करने में कतराते हैं। सरकार सभी लोगों से अनुरोध करती रहती है, कि कृपया बाइक चलाते समय हेलमेट का इस्तेमाल करें, कार चलाते समय सीट बेल्ट का ध्यान रखें, अन्यथा आपका चालान कट जाएगा। सरकार यह अपने लिए नहीं करती है, या किसी चालान काटने के लिए नहीं करती है, पब्लिक सुरक्षित रहे। क्योंकि पब्लिक तो अपनी सुरक्षा का ध्यान रखती ही नहीं है, तो इसका जिम्मा किसी ना किसी को तो उठाना ही पड़ेगा। परंतु पब्लिक फिर भी सरकार को ही दोष देती है, कि सरकार ने चालान बढ़ा दिए हैं। वैसे तो देखा जाए सड़क दुर्घटना होने के अनेक कारण हैं, जिनका हमें समाधान करने की बहुत ही ज्यादा आवश्यकता है।

**“राष्ट्रीय और राजमार्ग दुर्घटनाओं को कम करने के सामाजिक प्रयासों पर जोर नहीं दिया जा सकता है। विकासशील देशों में समस्या की गंभीरता अत्यधिक स्पष्ट है। ट्रक और बस जैसे भारी वाहन 50 प्रतिशत से अधिक के कारण हैं भारत में कुल सड़क दुर्घटनाएं भारत में हर 2.75 मिनट में एक दुर्घटना होती है।”<sup>2</sup>**

सबसे बड़ा सड़क दुर्घटना का कारण यही है, कि लोगों में अनुशासन नहीं है। अगर हमारे लिए नियम और कायदे बनाए गए हैं, कि हमें हेलमेट लगाना है। सीट बेल्ट पहने नहीं है, तो हम वह नियम कायदे क्यों नहीं मानते हैं। अगर हम नियम कायदे नहीं मानेंगे, तो जाहिर सी बात है, हम दुर्घटना से संभावित जरूर होंगे, और हमें इसके चलते गंभीर चोटे जरूर आ सकती है, हो सकता है, हमारी जान भी चली जाए।

“ट्रिप अल्कर एच, ने ‘रोड ट्रैफिक एंड इट्स कंट्रोल’ (1938) पर अपनी पुस्तक में यातायात की समस्या और सड़क से रेल, समुद्र और वायु के संबंध की जांच की दुर्घटनाओं को कम करने और सुचारु करने के लिए परिवहन और यातायात नियंत्रण का विज्ञान यातायात का संचालन पर सुझाव लिखे हैं।”<sup>3</sup>

सबसे ज्यादा सड़क दुर्घटना रेलवे क्रॉसिंग पर देखने को मिलती है। लोगों को वहां से जाने की इतनी जल्दी होती है, कि वह फाटक खुलने तक का भी इंतजार नहीं करते हैं। बल्कि फाटक के नीचे होकर अपनी बाइक और साइकिल निकालने का प्रयत्न करते हैं, जिसकी वजह से अगर अचानक से ट्रेन आ जाती है, तो वह दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं। अगर हम कहें किसी जगह 5 या 10 मिनट लेट पहुंचते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है, कि कोई हमें फांसी पर चढ़ा देगा, ऐसा नहीं होता है, हमें सबसे जरूरी यह चाहिए कि, हम अपनी जान को जोखिम में ना डालें भले ही हम देरी से क्यों ना पहुंचे।

“अगर आपको अनुशासन का इतना ही ख्याल है, कि हमें अपने दफ्तर या ऑफिस में टाइम पर पहुंचना है, तो आपको चाहिए कि आप घर से कम से कम 10 से 15 मिनट पहले निकले इससे आप जल्दी

**भी पहुंचेंगे और आप खुद के लिए जल्दी भी नहीं करेंगे अपने आप को क्षति ग्रस्त होने से बचा सकेंगे।”<sup>4</sup>**

टेक्नोलॉजी की वजह से आजकल का सबसे बड़ा दुर्घटना का कारण एक मोबाइल फोन भी बन गया है। लोगों को आदत हो गई है, जैसे ड्राइविंग करते करते मोबाइल पर बात करते वक्त लोगों को यह भी नहीं सुनाई देता है, कि पीछे से कौन हॉर्न बजा रहा है। सामने से कौन सी गाड़ी आ रही है, हमें बहुत ही बातों में सतर्क रहने की आवश्यकता है। कई लोगों को ड्राइविंग करते समय रेडियो या गाने सुनने की बहुत ज्यादा आदत होती है। इसके साथ हमें आसपास आगे पीछे का भी ध्यान रखना चाहिए। कई बार कई लोगों को बहुत ज्यादा फास्ट ड्राइविंग पसंद होती है। इससे भी हम क्षति ग्रस्त हो सकते हैं, क्योंकि आगे या पीछे से कोई भी वाहन अगर तेजी से आ रहा होगा, और हम भी तेजी से होंगे तो जाहिर सी बात है कि दुर्घटना तो होगी। शराब पीकर गाड़ी चलाना। लोग लेट नाइट पार्टी करके अपने घर जाते हैं, तब वह वाहन इतनी जोर से चलाते हैं, और अपने होश में भी नहीं होते हैं तो संभावना है दुर्घटना होती है।

एक कारण यह भी है, कि लोग रेड लाइट तक देखते नहीं है और उसे जल्दबाजी में क्रॉस कर जाते हैं, और इधर उधर से आने वाले वाहन टक्कर दे देते हैं, जिसकी वजह से सड़क दुर्घटना हो जाती है। कई बार सड़क पर कोई नुकली भी चीज पड़ी रहती है, जिसकी वजह से वह हमारे टायर में लग जाती है, और टायर फटने की संभावना रहती है। जैसे ही टायर फटता है तो हमारा वाहन असंतुलित हो जाता है, जिसकी वजह से टक्कर होने की संभावना रहती है, तो हमें चाहिए कि अगर आपको सड़क पर कुछ ऐसी चीज की संभावना हो तो आप अपनी स्पीड कम करें और वाहन को ध्यान पूर्वक चलाएं।

प्राकृतिक और अन्य कारण की वजह से जो हमारे बस में नहीं होते हैं। जैसे मौसम खराब हो जाना, अचानक से बहुत तेज बारिश आ जाना, बहुत तेज तूफान आ जाना, हमारे वाहन के सामने किसी जानवर का आ जाना, इन सब चीजों से भी कई बार दुर्घटना हो जाती है, लेकिन यह दुर्घटना हमारे बस में नहीं होती है।

**निष्कर्ष**— अगर हम चाहे तो सड़क दुर्घटनाओं को रोक सकते हैं। रोज ना जाने कितने परिवार खत्म होते हैं, रोज ना जाने कितनों के अपने प्यारे सदस्य खत्म हो जाते हैं। सिर्फ सड़क दुर्घटना की वजह से हमें चाहिए कि हम सरकार के नियमों का पालन करें उनका उल्लंघन ना करें। हम अपने अनुशासन में रहकर ड्राइविंग करते हैं, तो सड़क दुर्घटना की संभावना बहुत कम हो जाएगी और धीरे-धीरे हम इस समस्या से निजात पा सकेंगे। “एम ओ मैथ्यू के अनुसार— परिवहन, एक सार्वजनिक उपयोगिता उद्योग होने के कारण सरकार द्वारा नियंत्रित किया जाता है। सरकार की नीतियां कई तरह से, जिनमें से कुछ का प्रत्यक्ष या परोक्ष है विकास के आकार का प्रभाव है।”<sup>5</sup> आज हमारी सुरक्षा के लिए सरकार ने यातायात के नियम बनाए हैं। यदि सभी इन नियमों के अनुसार चले और इनका पालन करें। तो दुर्घटना जैसे मामले सामने नहीं होंगे।

हमारी सुरक्षा के लिए बनाए गए नियमों का उलंघन कर हम खुद के जीवन को संकट में डाल देते हैं। हमेशा यातायात के नियमों का पालन करते हुए चलना चाहिए, जिससे हमारे जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। बाइक और साइकिल जैसे दुपहिया वाहन को चलाते समय हमें हेलमेट का प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि ज्यादातर दुर्घटना दुपहिया वाहनों के साथ ही होती है। इसलिए हेलमेट पहनकर अपनी सुरक्षा करें। चार पहिया वाहन चालक हमेशा सीटबेल्ट का प्रयोग करें। जब एक सड़क दुर्घटना का दृश्य देखते हैं। आँखों से आंसू

निकल पड़ते हैं। लोग नशे में अंधे होकर दुर्घटना का शिकार होते हैं, तथा इस दुखद घटना में सबसे ज्यादा दर्द के साथ व्यक्ति की मौत होती है। आज से ही हम सभी को शपथ लेनी चाहिए। और हमेशा सावधानीपूर्वक वाहनों को चलाकर अपने जीवन की रक्षा करनी चाहिए।

### संदर्भ सूची

- 1— स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, एकीकृत रोग निगरानी परियोजना— परियोजना कार्यान्वयन योजना 2004–2009, नई दिल्ली, सरकार भारत; पृ.18, 2004
- 2— गुनासेकरन, के., 'एसटीयू बसों से जुड़े सड़क दुर्घटनाओं का विश्लेषण', अप्रकाशित थीसिस, मार्च 1997, पृ.12
- 3— एच. ट्रिप अल्कर, 'सड़क यातायात और उसका नियंत्रण, एडवर्ड अर्नोल्ड कंपनी, लंदन, 1938, पृ.12
- 4— वही, पृ.26
- 5— एमओ मैथ्यू, 'भारत में रेल और सड़क परिवहन —एक अध्ययन आकार और संगठन, बुक एजेंसी, कलकत्ता, 1964, पृ.42



Contributors Details:

अनिल कुमार गोयल  
शोध छात्र समाजशास्त्र